Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हृषीकेश सुलभ के 'धरती आबा' नाटक में आदिवासी अस्मिता और बिरसा मुंडा का जननायकत्व

प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार
शोध निर्देशक, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं संशोधन केंद्र, श्री. शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का ना.स.पाटील साहित्य एवं मुल्ला फिदा अली मुल्ला अब्दुल अली वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले 424001
अनिलकुमार मुरलीधर सोनवणे,
शोध छात्र, क. ब. चौ. उ. म. वि., जलगाव

सारांश:
समकालीन हिंदी नाट्य-साहित्य में हृषीकेश सुलभ का धरती आबा एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक और आदिवासी चेतना से संपन्न नाटक है। इसमें नाटककार ने आदिवासी जननायक बिरसा मुंडा के जीवन-संघर्ष, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक जागरण और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध किए गए विद्रोह का प्रभावशाली चित्रण किया है। नाटक केवल बिरसा के जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं का पुनर्पाठ नहीं करता, बल्कि औपनिवेशिक शासन, जमींदारी व्यवस्था, महाजनी शोषण, धार्मिक हस्तक्षेप और आदिवासी विस्थापन के कारणों की भी पड़ताल करता है। बिरसा मुंडा आदिवासी समाज को अंधविश्वास, भय, अशिक्षा और बिखराव से मुक्त करके संगठन, संघर्ष और आत्मसम्मान का मार्ग दिखाते हैं। नाटक में लोकगीत, प्रतीक, संवाद, पूर्वदीप्ति और जनजातीय सांस्कृतिक तत्त्वों के माध्यम से बिरसा को केवल मुंडा समुदाय के नायक के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय मुक्ति, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक न्याय के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया है।

बीज शब्द:
हृषीकेश सुलभ, धरती आबा, बिरसा मुंडा, इतिहास-बोध, आदिवासी अस्मिता, औपनिवेशिक शोषण, जल-जंगल-जमीन, सांस्कृतिक चेतना, प्रतिरोध और जननायकत्व।

प्रस्तावना:
नाटक साहित्य की ऐसी सशक्त विधा है, जिसमें शब्द, अभिनय, संगीत, संवाद, दृश्य और रंगमंचीय क्रिया के माध्यम से जीवन के यथार्थ को सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। कहानी और उपन्यास मुख्यतः पढ़े जाते हैं, किंतु नाटक पढ़े जाने के साथ मंच पर देखा और अनुभव भी किया जाता है। इसलिए नाटक सामाजिक चेतना के प्रसार का अत्यंत प्रभावी माध्यम है। समकालीन हिंदी नाटककारों ने भारतीय समाज की राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को रंगमंच से जोड़कर नाटक को नई वैचारिक दिशा प्रदान की है।
हृषीकेश सुलभ ऐसे ही बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने लोकनाट्य, इतिहास, सामाजिक यथार्थ और आधुनिक रंगशिल्प का समन्वय करते हुए समाज के वंचित समुदायों के संघर्ष को साहित्य के केंद्र में

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्थान दिया। उनका धरती आबा नाटक आदिवासी जननायक बिरसा मुंडा के जीवन और आंदोलन पर आधारित है। यह नाटक औपनिवेशिक इतिहास को शासकों की दृष्टि से नहीं, बल्कि शोषित आदिवासी समुदाय की दृष्टि से प्रस्तुत करता है। इस कारण यह एक ऐतिहासिक नाटक होने के साथ आदिवासी अस्मिता और जनप्रतिरोध का महत्त्वपूर्ण नाटकीय दस्तावेज भी है।

विषय प्रवेश:

हृषीकेश सुलभ समकालीन हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार, नाटककार और रंगचिंतक हैं। उनका जन्म 15 फरवरी 1955 को बिहार के लहेजी गाँव में हुआ। बचपन से ही उनकी रुचि रंगमंच और साहित्य में रही। पारिवारिक संस्कार, ग्रामीण जीवन, लोकपरंपरा और सांस्कृतिक आंदोलनों से उनकी रचनात्मक दृष्टि विकसित हुई। उन्होंने कहानी, नाटक, रंग-समीक्षा और अन्य साहित्यिक विधाओं में महत्त्वपूर्ण लेखन किया। बटोही, अमली और धरती आबा उनके चर्चित नाटक हैं। इन रचनाओं में लोकजीवन, सामाजिक विषमता, स्त्री-संघर्ष, जातिगत असमानता, आदिवासी चेतना तथा शोषणकारी सत्ता-संरचनाओं का चित्रण मिलता है। अपलोड सामग्री में उनके साहित्यिक योगदान के साथ प्राप्त सम्मानों का भी उल्लेख किया गया है।

हृषीकेश सुलभ का नाट्य-लेखन केवल लिखित साहित्य तक सीमित नहीं रहता। उनके नाटक मंच की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रचे गए हैं। संवादों की सहजता, लोकगीतों का प्रयोग, पात्रानुकूल भाषा, दृश्यात्मकता और नाटकीय संघर्ष उनके नाटकों को प्रभावशाली बनाते हैं। वे इतिहास को मृत घटनाओं का क्रम न मानकर वर्तमान जीवन को समझने का माध्यम बनाते हैं।

धरती आबा बिरसा मुंडा के जीवन और उनके नेतृत्व में विकसित आदिवासी प्रतिरोध पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन, जमींदारों, महाजनों और बाहरी शोषक शक्तियों के विरुद्ध मुंडा समुदाय को संगठित किया। उनका संघर्ष केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का संघर्ष नहीं था, वह भूमि-अधिकार, सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक स्वायत्तता और मानवीय गरिमा की रक्षा का आंदोलन भी था।

नाटककार ने बिरसा के जीवन की घटनाओं को केवल कालक्रम में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उनके माध्यम से औपनिवेशिक व्यवस्था की मूल प्रकृति का उद्घाटन किया है। अंग्रेजी शासन जंगलों, नदियों, जमीन और प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार स्थापित करता है। दूसरी ओर जमींदार, महाजन, मिशनरी और प्रशासनिक अधिकारी आदिवासियों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में हस्तक्षेप करते हैं।

इस प्रकार धरती आबा का इतिहास-बोध राजाओं और युद्धों के इतिहास से अलग है। यह उस जनसमुदाय का इतिहास प्रस्तुत करता है, जिसे औपचारिक इतिहास-लेखन में पर्याप्त स्थान नहीं मिला। इसमें इतिहास का केंद्र शासक नहीं, बल्कि जंगल, गाँव और अपनी भूमि के लिए संघर्ष करने वाला आदिवासी समुदाय है।

नाटक का प्रारंभ बिरसा मुंडा के आगमन का स्वागत करने वाले गीत से होता है,

"तुम उगे सूर्य के जैसे चलकद में,
तुम आँधी बनकर गरजे चलकद में।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

तीर-धनुष पास तुम्हारे,
और पास कुल्हाड़ी।
पाथर-माटी, घास-फूस,
तुम धूल-गर्द में खेले।
तुम उगे सूर्य के जैसे चलकद में।"[1]

इन पंक्तियों में बिरसा की तुलना सूर्य और आँधी से की गई है। सूर्य प्रकाश, आशा और नए जीवन का प्रतीक है, जबकि आँधी परिवर्तनकारी शक्ति और विद्रोह का संकेत देती है। बिरसा का जन्म साधारण आदिवासी परिवार में होता है, परंतु उनका व्यक्तित्व अपने समुदाय के लिए आशा के प्रकाश में बदल जाता है। तीर-धनुष और कुल्हाड़ी आदिवासी जीवन, श्रम, आत्मरक्षा और संघर्ष के प्रतीक हैं। पहाड़, नदी और जंगल का नृत्य करना यह दिखाता है कि बिरसा का जीवन प्रकृति और आदिवासी समुदाय से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। नाटककार का उद्देश्य बिरसा को चमत्कारी देवता बनाना नहीं, बल्कि जनता से उत्पन्न ऐसे नायक के रूप में प्रस्तुत करना है जो अपने समुदाय की पीड़ा को पहचानता है।

धरती आबा में आदिवासी संघर्ष का केंद्रीय प्रश्न जल, जंगल और जमीन पर सामुदायिक अधिकार है। अंग्रेजी शासन से पहले जंगल, नदियाँ और जमीन मुंडा समुदाय के जीवन का स्वाभाविक हिस्सा थे। औपनिवेशिक कानूनों और प्रशासनिक व्यवस्था ने इन संसाधनों पर सरकारी अधिकार स्थापित किया। फलस्वरूप आदिवासी अपने ही जंगल से लकड़ी लेने, नदियों से पानी लेने और मछली पकड़ने जैसे परंपरागत अधिकारों से वंचित होने लगे। धानी बिरसा से कहता है,

"अपने लोगों के लिए। जंगल हमारे थे... नदियाँ हमारी थीं... धरती हमारी थी। दिकू आए... जमींदार आए... मिशन आया... चर्च आया... अंग्रेज आए... सिपाही आए... कचहरी आई। सब पसरते गए और हम मुंडा लोग अपने पाँव सिकोड़ते रहे।"[2] यह संवाद आदिवासी विस्थापन के क्रमिक इतिहास को अत्यंत मार्मिक रूप से अभिव्यक्त करता है। 'अपने पाँव सिकोड़ना' केवल भौगोलिक क्षेत्र के सीमित होते जाने का संकेत नहीं है। यह अधिकार, स्वतंत्रता, संस्कृति और आत्मसम्मान के निरंतर संकुचन का प्रतीक है। बाहरी शक्तियाँ एक साथ नहीं आतीं, वे धीरे-धीरे प्रशासन, धर्म, कानून, कर्ज और जमीन के माध्यम से आदिवासी जीवन पर नियंत्रण स्थापित करती हैं। नाटककार यह स्पष्ट करते हैं कि आदिवासी विद्रोह अचानक उत्पन्न हिंसा नहीं, बल्कि लंबे समय तक चले शोषण और बेदखली की प्रतिक्रिया था।

बिरसा मुंडा का संघर्ष केवल अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं है। वे अपने समाज के भीतर मौजूद अंधविश्वास, कर्मकांड, भय और रूढ़ियों का भी विरोध करते हैं। उनका विश्वास है कि भय मनुष्य को मानसिक रूप से गुलाम बनाता है। इसलिए राजनीतिक स्वतंत्रता से पहले सामाजिक और मानसिक स्वतंत्रता आवश्यक है। बिरसा अपनी माँ करमी से कहता है,

"मैंने छोड़ दी ठाकुर की पूजा। अब मैं किसी की नहीं पूजने वाला, न ठाकुर को और न तेरे सिंबोडा को।"[3]

यह कथन धर्म-विरोध नहीं, बल्कि ऐसे कर्मकांडों के विरोध की घोषणा है जो मनुष्य को निष्क्रिय और भयभीत बनाते हैं। बिरसा पूजा के स्थान पर कर्म, सेवा, संगठन और आत्मविश्वास को महत्त्व देते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चाल्की की मृत्यु का प्रसंग इस विचार को और स्पष्ट करता है। चाल्की की मृत्यु प्रसव के समय उचित भोजन और उपचार के अभाव में होती है, लेकिन समाज उसकी मृत्यु को प्रेत और दैवी शक्ति से जोड़ देता है। बिरसा उसकी कब्र से चाँदी की अँगूठी निकालकर लोगों के मन में बैठा भय तोड़ता है। वह बताता है कि चाल्की की मृत्यु किसी देवता या प्रेत के कारण नहीं, बल्कि भूख, गरीबी और स्वास्थ्य-सुविधाओं के अभाव के कारण हुई। इस प्रसंग में नाटककार ने अंधविश्वास के सामाजिक और आर्थिक कारणों को उजागर किया है। जब समाज बीमारी, भूख और मृत्यु के वास्तविक कारणों को नहीं समझता, तब शोषक शक्तियाँ उसके भय का लाभ उठाती हैं। बिरसा वैज्ञानिक चेतना, स्वास्थ्य-जागरूकता और मानवीय सेवा को सामाजिक सुधार का आधार बनाते हैं।

नाटक के शीर्षक का संबंध बिरसा की माँ करमी के संवाद से है। वह बिरसा से कहती है, "मेरे आबा, पर वे तुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे... मार डालेंगे... तुम्हें भगवान बनना पड़ेगा। वे तुम्हें बहुत दुख देंगे। दुख सहने के लिए भगवान बनना पड़ता है मेरे आबा। इस धरती का आबा बनना पड़ेगा तुम्हें। बिना धरती का आबा बने धरती की लाज नहीं ढँक सकता कोई।"[4] 'आबा' का सामान्य अर्थ पिता है। किंतु नाटक में 'धरती आबा' का अर्थ धरती और उसके लोगों की रक्षा करने वाला जननायक है। करमी का कथन बिरसा को अलौकिक शक्ति नहीं देता, बल्कि उन्हें बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए तैयार करता है। यहाँ भगवान बनने का अर्थ पूजा करवाना नहीं, बल्कि जनता का दुख सहना है। करमी के अनुसार जो व्यक्ति समाज की पीड़ा अपने ऊपर लेता है, वही जनता की दृष्टि में भगवान बनता है। इस प्रकार बिरसा का देवत्व धार्मिक चमत्कार से नहीं, बल्कि सेवा, त्याग, साहस और संघर्ष से निर्मित होता है। नाटककार ने माँ और पुत्र के संवाद के माध्यम से बिरसा के व्यक्तिगत जीवन को सामुदायिक दायित्व में परिवर्तित किया है। बिरसा अब केवल करमी का पुत्र नहीं रहता, वह पूरी धरती और आदिवासी समाज का 'आबा' बन जाता है।

बिरसा यह समझते हैं कि बिखरा हुआ समाज औपनिवेशिक सत्ता का सामना नहीं कर सकता। इसलिए वे गाँव-गाँव जाकर मुंडा समुदाय को संगठित करते हैं। वे सांकेतिक संचार का प्रयोग करते हुए अपने साथियों से कहते हैं, "गाँव-गाँव में तीर भेज दो। बनाओ जितने हो सकें तीर बनाओ और हर गाँव में भेज दो। पहले हथियार जमा करो। जब पत्ता भेजूँ तो लोग समझें कि मैंने धरम के काम के लिए बुलाया है और जब तीर भेजूँ तो लोग समझ जाएँ कि लड़ाई के लिए बुलाया है।"[5] यह संवाद बिरसा की संगठन-क्षमता और नेतृत्व-कौशल को सामने लाता है। पत्ता और तीर केवल संदेश देने की वस्तुएँ नहीं हैं। पत्ता सामाजिक और धार्मिक जागरण का संकेत है, जबकि तीर राजनीतिक प्रतिरोध और संघर्ष का प्रतीक है। बिरसा की लड़ाई केवल हथियारों की लड़ाई नहीं है। वे आदिवासियों से लगान न देने, महाजनों से कर्ज न लेने, चाय बागानों में कुली न बनने, कोयला खानों में जीवन न गँवाने और सूद के लिए जमीन गिरवी न रखने का आह्वान करते हैं। यह आर्थिक असहयोग की रणनीति है। इससे स्पष्ट होता है कि बिरसा औपनिवेशिक शोषण के आर्थिक आधार को पहचानते हैं। अंग्रेजी सत्ता केवल सेना के बल पर नहीं, बल्कि लगान, कर्ज, श्रम और जमीन पर नियंत्रण के माध्यम से शासन करती है। बिरसा इसी व्यवस्था के बहिष्कार की चेतना जगाते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

बिरसा की बढ़ती लोकप्रियता से अंग्रेजी शासन चिंतित हो जाता है। उन्हें पकड़ने के लिए प्रशासन शक्ति, लालच और विश्वासघात का सहारा लेता है। मानमारू और जरीकेल जैसे लोगों को प्रलोभन देकर बिरसा की गिरफ्तारी कराई जाती है। यह प्रसंग बताता है कि साम्राज्यवादी सत्ता बाहरी दमन के साथ समुदाय के भीतर विभाजन भी उत्पन्न करती है। बिरसा की गिरफ्तारी के समय धानी कहती है, "वे लोग भगवान को खोज रहे हैं। पर क्या भगवान को खोज पाना इतना आसान है? हम लोग जनम-जनम तक राह निहारते रहे, तब मिले भगवान। वे कुत्तों की तरह पूरे जंगल में फैल गए हैं ताकि भगवान को खोज सकें।"[6] इस संवाद में 'भगवान' जनता के विश्वास और सामूहिक आकांक्षा का प्रतीक है। अंग्रेज बिरसा के शरीर को गिरफ्तार कर सकते हैं, किंतु उस विचार और चेतना को नहीं पकड़ सकते जो पूरे जंगल में फैल चुकी है। नाटक में बिरसा की गिरफ्तारी राजनीतिक पराजय नहीं बनती। वह आदिवासी समाज के भीतर नई चेतना और संघर्ष की स्मृति उत्पन्न करती है। इसलिए बिरसा की मृत्यु के बाद भी उनकी विचारधारा जीवित रहती है।

बिरसा मुंडा का जननायकत्व:

बिरसा मुंडा का जननायकत्व कई स्तरों पर निर्मित होता है। वे अपने समुदाय के दुख को व्यक्तिगत दुख मानते हैं, बीमारी के समय लोगों की सेवा करते हैं, अंधविश्वास का विरोध करते हैं, राजनीतिक शोषण को पहचानते हैं और सामूहिक संगठन स्थापित करते हैं। उनका नायकत्व किसी राजवंश, पद या सत्ता से प्राप्त नहीं हुआ। वह जनता के बीच रहकर, उसके दुखों को समझकर और उसके अधिकारों के लिए संघर्ष करके निर्मित हुआ। इसीलिए वे आदिवासी समाज के साथ पूरे भारतीय समाज के नायक बन जाते हैं। उनका संघर्ष राष्ट्रवाद की व्यापक अवधारणा प्रस्तुत करता है। राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि वहाँ रहने वाले लोगों, उनकी भूमि, संस्कृति और सम्मान से बनता है। जो व्यवस्था किसी समुदाय को उसकी भूमि और अधिकार से वंचित करती है, उसके विरुद्ध संघर्ष राष्ट्रविरोध नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण राष्ट्र-निर्माण का प्रयास है। बिरसा का राष्ट्रप्रेम मातृभूमि के प्रति भावनात्मक लगाव तक सीमित नहीं है। वह जल, जंगल, जमीन और मनुष्य की गरिमा की रक्षा से जुड़ा हुआ है। इसी कारण उनका चरित्र वर्तमान समय में भी प्रासंगिक और भविष्योपयोगी है।

धरती आबा की आरंभिक और अंतिम संरचना गीतात्मक है। शुरुआत में बिरसा को उगते सूर्य और परिवर्तनकारी आँधी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अंत में उनके बलिदान के बाद देश की स्थिति और भविष्य की आशा व्यक्त होती है,

"धरती आग की लपटों में,
लपटें हैं जीभ निकाले।
असहाय काँपता देश हमारा,
जैसे पत्ते काँपें।
अँधियारे में छिपा देश,
आठों कोने खोजो।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

तुम उगो सूर्य के जैसे जन-जन में,
तुम आँधी बनकर गरजो हर वन में।"[7]

यह गीत निराशा और आशा दोनों को एक साथ व्यक्त करता है। धरती आग में है और देश असहाय काँप रहा है, परंतु बिरसा से जन-जन में सूर्य की तरह पुनः उदित होने की अपेक्षा की जाती है। इसका अर्थ है कि बिरसा की शारीरिक मृत्यु के बाद भी उनका संघर्ष समाप्त नहीं होता। गीत नाटक को लोकनाट्य से जोड़ते हैं। पहाड़, नदी, जंगल, सूर्य, आँधी, तीर और पत्ता जैसे प्रतीक आदिवासी जीवन और प्रकृति के संबंध को रंगमंच पर दृश्यात्मक बनाते हैं। संवादों में स्थानीय शब्दों और लोकभाषा का प्रयोग पात्रों एवं परिवेश को स्वाभाविकता देता है।

अनुसंधाता के मतानुसार धरती आबा में हृषीकेश सुलभ ने बिरसा मुंडा के ऐतिहासिक व्यक्तित्व का केवल गौरवगान नहीं किया, बल्कि उनके आंदोलन की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि का कलात्मक पुनर्पाठ प्रस्तुत किया है। नाटक में बिरसा का संघर्ष तीन स्तरों पर विकसित होता है औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध राजनीतिक संघर्ष, जमींदार-महाजन के विरुद्ध आर्थिक संघर्ष और अंधविश्वास के विरुद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्ष। नाटक की प्रमुख उपलब्धि यह है कि वह आदिवासी समाज को निष्क्रिय, असभ्य अथवा पिछड़े समुदाय के रूप में प्रस्तुत नहीं करता। इसके विपरीत, मुंडा समुदाय को अपनी संस्कृति, भूमि और सामाजिक व्यवस्था की रक्षा करने वाला जागरूक समुदाय दिखाया गया है। बिरसा का नायकत्व भी किसी बाहरी शक्ति द्वारा आरोपित नहीं है, वह समुदाय के भीतर से विकसित होता है।

निष्कर्ष:

हृषीकेश सुलभ का धरती आबा हिंदी नाट्य-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक और आदिवासी विमर्शपरक कृति है। नाटक में बिरसा मुंडा के जीवन-संघर्ष के माध्यम से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, जमींदारी शोषण, महाजनी व्यवस्था, धार्मिक हस्तक्षेप और आदिवासी विस्थापन का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। बिरसा मुंडा आदिवासी समाज को भय, अंधविश्वास और बिखराव से बाहर निकालकर संगठन, कर्म और प्रतिरोध की दिशा देते हैं। वे जल, जंगल और जमीन को केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता और जीवन के आधार के रूप में देखते हैं। उनका जननायकत्व जनता की सेवा, संघर्ष और बलिदान से निर्मित होता है।

नाटक की भाषा सहज, संवाद प्रभावशाली और रंगशिल्प लोकधर्मी है। आरंभिक तथा अंतिम गीत बिरसा को सूर्य और आँधी के प्रतीक के रूप में स्थापित करते हैं। इस प्रकार नाटक इतिहास, लोकसंस्कृति और आधुनिक सामाजिक चेतना का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में भूमि-अधिकार, पर्यावरणीय संकट, आदिवासी विस्थापन और सांस्कृतिक अस्मिता से जुड़े प्रश्नों के कारण धरती आबा की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। बिरसा मुंडा का चरित्र मानवीय स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और सामूहिक प्रतिरोध का प्रेरणादायी प्रतीक है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

संदर्भ ग्रंथ:

1. सुलभ, हृषीकेश. धरती आबा. तृतीय संस्करण, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2019, पृ. 17–18
2. वही, पृ. 23
3. वही, पृ. 26
4. वही, पृ. 35
5. वही, पृ. 46
6. वही, पृ. 87
7. वही, पृ. 96